मेरी अभिव्यक्ति

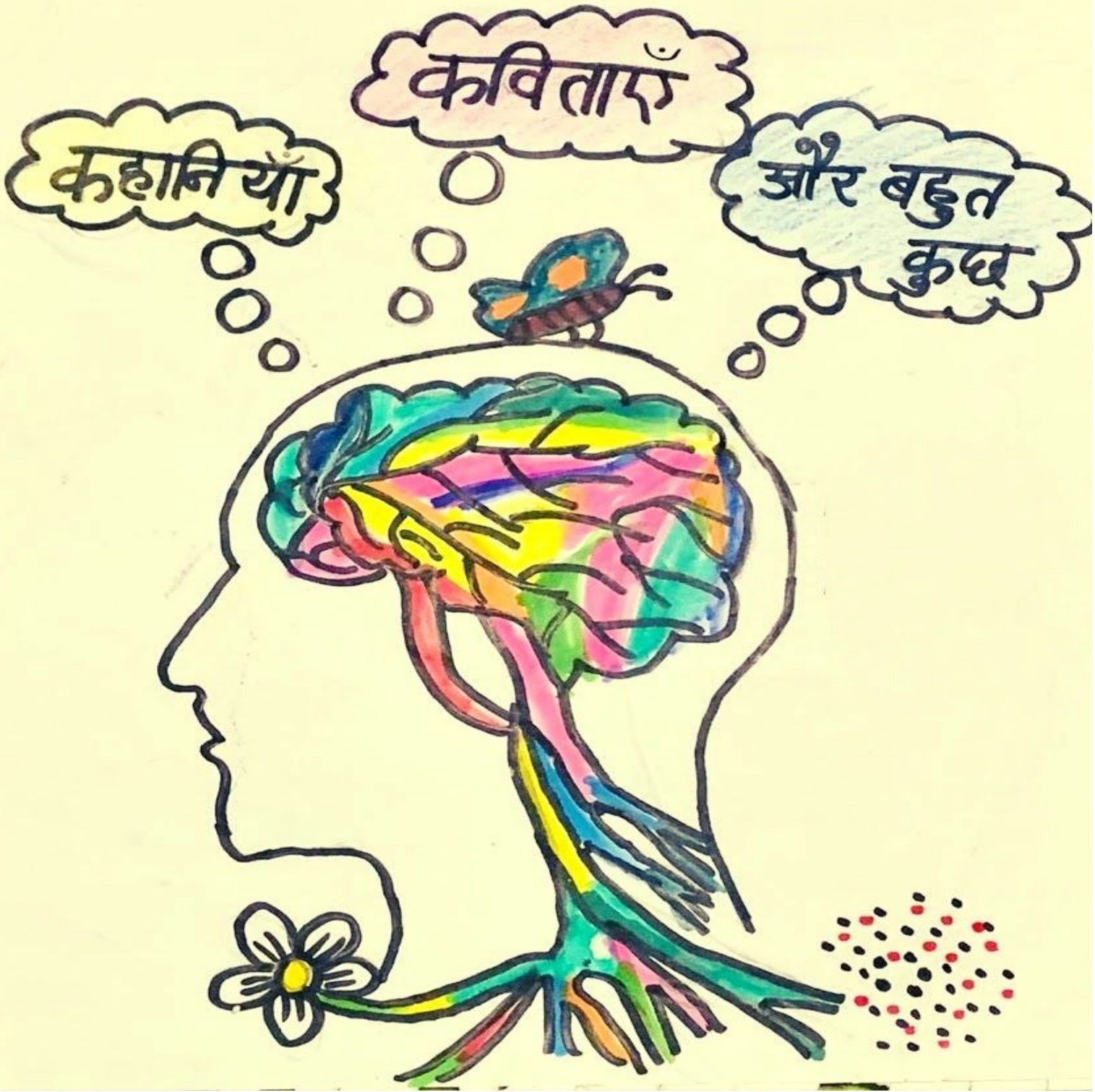

मेरी अभिव्यक्ति

सम्पादन - फहीम अहमद

सहायक सम्पादक :-
- अवनी
- इवान
- धैर्य
- आदित्य
- आदीप

मुख्य पृष्ठ - अवनी

• मेरी दुनिया कविता के रूप में
09 पक्की दोस्ती
12 हमारी चाहत
35 बारिश
36 कोई बात नहीं
37 एक था हाथी, बड़ा करामाती

• कोरोना के संग : छुट्टियों के रंग
24 छुट्टियों के दिन - 1
25 कोरोना
27 छुट्टियों के मेरे दिन
28 शीर्षक विहीन कविता
29 छुट्टियों के दिन - 2

• कोरोना के संग : छुट्टियों के रंग

30 मास्क धोने की विधि
31 मास्क पहनने की विधि
32 ताला
32 छुट्टियों के दिन - 3
33 छुट्टियों के दिन - 5

• जानवरों की दुनिया

21. चीता इतनी तेज़ कैसे भागता है ?
22 क्या सारे जानवर तैर सकते हैं ?
23. नर शेर शिकार नहीं करते ?

• मेरे किस्से

13 बारिश
15 मोहन की बकरी
17 सांची
11 पर्पल सनबर्ड और मैं
33 पशु - पक्षी और मैं
38 पनीर की कहानी
07 कम्पोस्टिंग : मेरा अनुभव

पुटकुलें - 20
गतिविधि - 1 - 14
- आधे को पूरा करें
गतिविधि - 2 - 16
- रंग भरो चित्र में
शेर : राहत इंदौरी - 39

सम्पादकीय

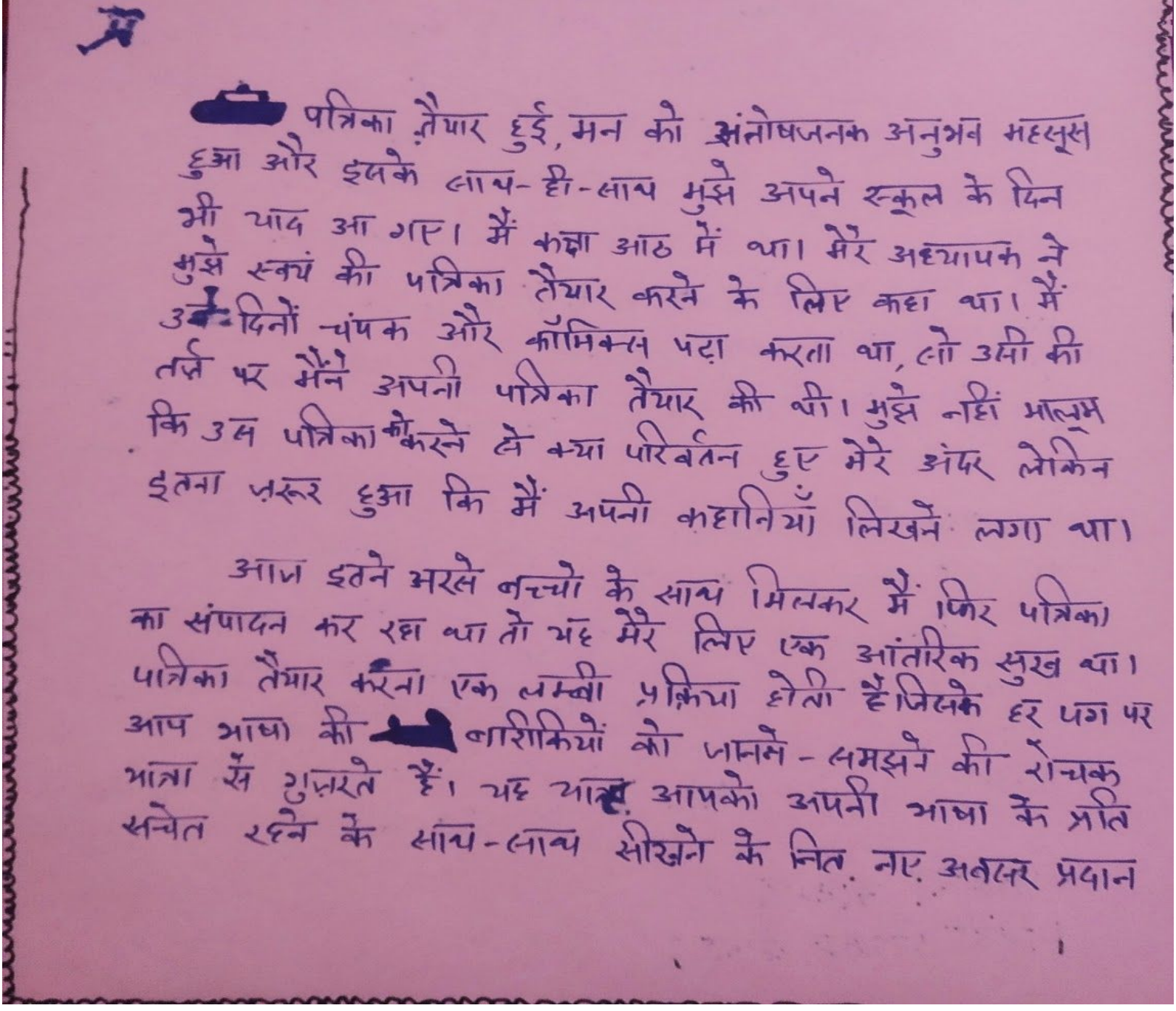

पत्रिका तैयार हुई, मन को अंतोषजनक अनुभव महसूस हुआ और इसके साथ-ही-साथ मुझे अपने स्कूल के दिन भी याद आ गए। मैं कक्षा आठ में था। मेरे अध्यापक ने मुझे स्कूल की पत्रिका तैयार करने के लिए कहा था। मैं उन दिनों चंपक और कॉमिक्स पढ़ा करता था, तो उसी की तर्ज़ पर मैंने अपनी पत्रिका तैयार की थी। मुझे नहीं मालूम कि उस पत्रिका को करने से क्या परिवर्तन हुए मेरे अंदर लेकिन इतना ज़रूर हुआ कि मैं अपनी कहानियाँ लिखने लगा था।

आज इतने अरसे बच्चों के साथ मिलकर मैं फिर पत्रिका का संपादन कर रहा था तो यह मेरे लिए एक आंतरिक सुख था। पत्रिका तैयार करना एक लम्बी प्रक्रिया होती है जिसके हर पग पर आप भाषा की बारीकियों को जानने-समझने की रोचक यात्रा से गुज़रते हैं। यह यात्रा आपको अपनी भाषा के प्रति सचेत रहने के साथ-साथ सीखने के नित नए अवसर प्रदान

करती है। इससे रचनात्मक अनुभव के साथ-साथ भाषाई कौशल का विकास होता है। कक्षा पाँच, छः और सात के छात्रों ने बड़ी सहर्षता के साथ यह अनुभव प्राप्त किया। पत्रिका सम्पादित करने और कराने में कक्षा सातवीं के छात्रों की मुख्य भूमिका रही। इन्होंने कक्षा छः और पाँच के छात्रों से रचनाओं को प्राप्त किया, उनको पढ़ा और भाषागत त्रुटियों को ठीक करते हुए पत्रिका के लिए उनका चयन किया।

कक्षा पाँच और छः के छात्रों ने अपनी-अपनी स्वरचित रचनाएँ रचीं। बार-बार वैचारिक और भाषिक स्तर की त्रुटियों को ठीक किया और अपनी रचनाओं के लिए सुंदर चित्रांकन भी किया।

पत्रिका तैयार होने की पूरी प्रक्रिया में वैचारिक तथा भाषिक स्तर पर 'शिल्पा दीदी' की पैनी दृष्टि बनी रही जिसकारण हमारी 'मेरी अभिव्यक्ति' पत्रिका और भी समृद्ध रूप ले संपन्न हुई। इस पत्रिका में छात्रों ने इस साल के स्वानुभवों को रचनाओं उकेरकर अपनी अभिव्यक्ति दर्ज की है। आशा करते हैं कि यह अभिव्यक्ति आपके अंतर्मन को मोह लेगी।

- फहीम अहमद
(हिंदी प्रोग्राम लीडर)

कम्पोस्टिंग – मेरा अनुभव

कम्पोस्ट एक प्रकार की खाद है जो जैविक पदार्थों के अपघटन एवं पुनः चक्रण से प्राप्त की जाती है।

मेरे घर में कम्पोस्ट बनाना लगभग पाँच साल पहले शुरू किया गया। पुणे शहर में हम एक बहुमंज़िली इमारत में रहते थे। घर की बॉलकोनी में एक कोने में "खम्बा" रखा हुआ था। "खम्बा" चार मिट्टी के बने मटके थे जो एक के ऊपर एक रखे हुए थे। घर में सूखा कचरा अलग किया जाता और गीला कचरा (जैसे छिलके, बचा कुचा खाना) सबसे ऊपरी मटके में डाल कर, एक रीमिक्स पाऊडर के साथ मिला दिया जाता। इसी तरह हर दिन का कचरा इसमें

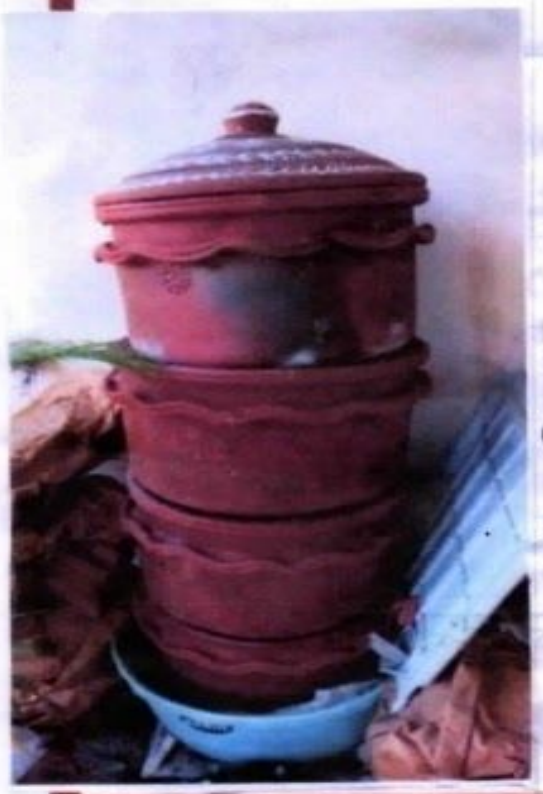

डालते और सप्ताह में एक दिन इसे हिलाते देते। लगभग तीन महीने में खाद तैयार। इस खाद को हम बगीचे में रखने वाले दोस्तों में बाँट देते। फिर मेरे पिता का तबादला बंगाल में हुआ। वहाँ हमारे पास बगीचा था। गीला कचरा हम मिट्टी में खोद कर दबा देते। दिल्ली में भी हम गीला कचरा अलग करके झाड़ियों में डाल देते हैं। कम्पोस्ट बनाने से हम पृथ्वी के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं।

लेखिका - जाह्नवी
कक्षा - सात

पक्की दोस्ती

आओ मित्र तुम्हें सुनाऊ,
एक कहानी,
इसमें ना तो राजा,
ना तो रानी।

जंगल में थे दो बाज़,
करते थे आपस में बात,
बातों-बातों में हो गई गहरी दोस्ती।

दोनों ने अपने दोस्तों से मिलाया,
उनके दोस्त थे
कुत्ता, शेर और कछुआ
सब मिलकर अच्छे से रहने लगे।

एक दिन बाज़ के अण्डों को लेने
दो शिकारी आए थे
अण्डों को देखकर दोनों शिकारी
के चहरे खिल उठे
तभी वहां पर शेर, कुरुर और
बाघ आ आएं
तीनों ने मिलकर शिकारी को छकाया
शिकारी ने अकल के घोड़े दौड़ाएं रे,
दोनों शिकारी सरपट-झटपट भागे रे।
तो समझे दोस्तों
यह है पक्की दोस्ती।

कवि - अयान दास
कक्षा - पाँचवी

पर्पल सनबर्ड और मैं

मेरे घर में या आसपास बहुत सारे पशु-पक्षी हैं। हम बालकनी में पानी रखते हैं इसीलिए वहां पर पर्पल सनबर्ड और फीमेल पर्पल सनबर्ड आते हैं और कभी-कभी कबूतर भी। पर्पल सनबर्ड को झूलने में बहुत मज़ा आता है और खुद से पकड़ के रस्सी पे टंगने में भी आता है। इसीलिए हमने उसके लिए पुराने प्लास्टिक के पाइप से उसके लिए झूलने और टंगने वाला झूला बनाया। 6-7 दिनों तक दोनों उस चीज़ का मज़ा ले रहे थे पर फिर उन्होंने छोड़ दिया बैठना। अब वो दोनों सिर्फ पानी पीने आते हैं।

लेखिका - लानी

(कक्षा - छः)

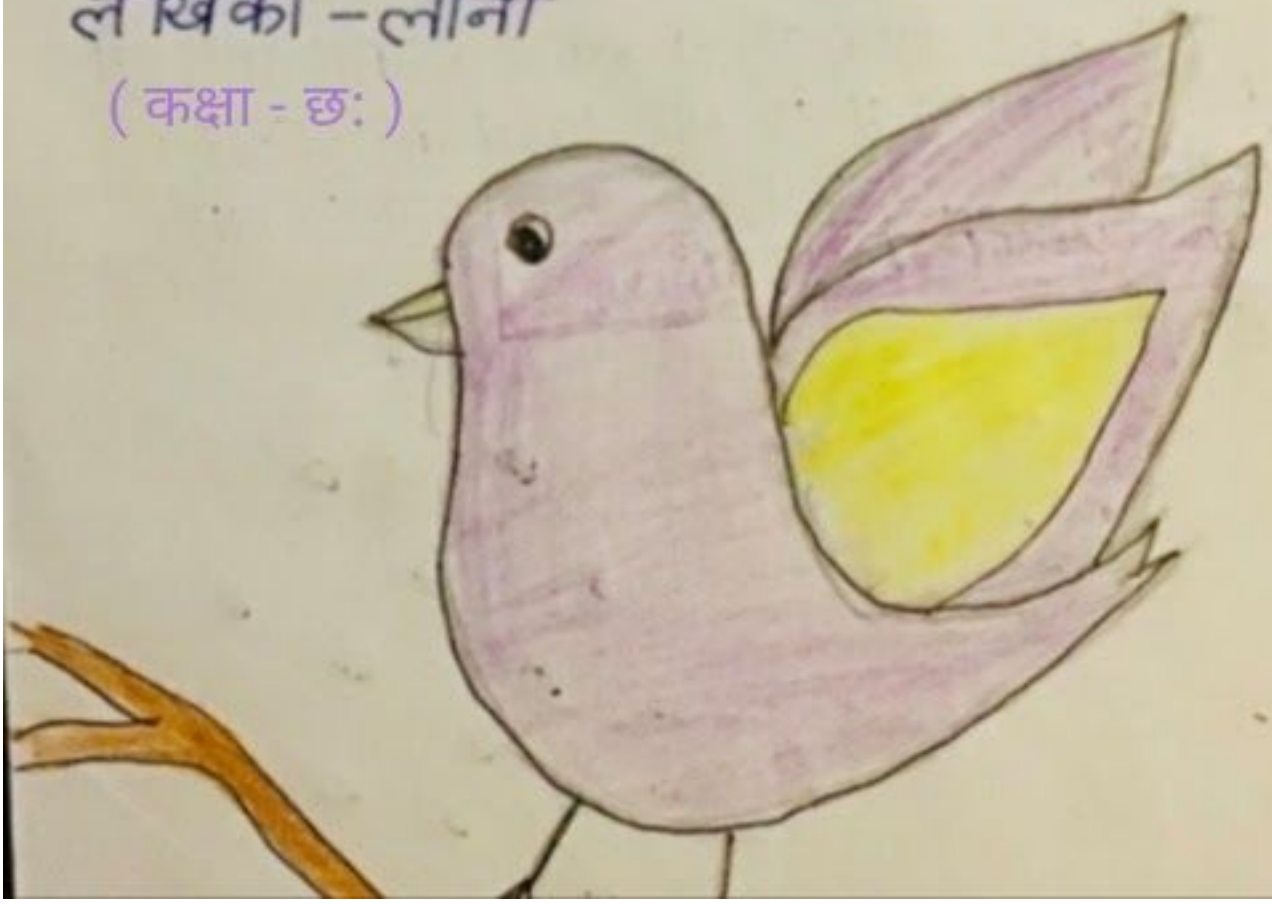

हमारी चाहत

इस दिन मिली थी हमें अंग्रेज़ो से राहत
अब हम कुछ भी कर सकते हैं जो थी हमारी
चाहत
पर नही मिलि अभी भी हमारे देशो की सरहद
फिर भी करते हैं एक दूजे की मदद
हम अपने देश को बनाए बहुत अच्छा
हर कोई हो इस देश मे अगर सच्चा
रहे हम सदैव साथ
जब भी चाहिए हो मदद, पकडे हम एक दूजे का हाथ
किसी को नहीं करने देंगे अपने ऊपर मनमानी
बस बहुत हुआ, अब नहीं सहेंगे इतनी शैतानी
तिरंगा लहराएंगे अपना हर दम
उन्नति की ओर बढ़ेंगे कदम-कदम

कवयित्री- वैभवी मल
कक्षा- छः

कहानी - बारिश

एक बार की बात है। मैं अपना होमवर्क कर रही थी। बाहर काफी बारिश हो रही थी। लिखते - लिखते जब मेरा हाथ थक गया तो खिड़की के बाहर देखने लगी थी। अभी आसमान में न तारें थे और न चाँद था। घर के सामने लगे पेड़ डोल कर रहे थे। मन हुआ, मैं जाकर डोल करूँ। लेकिन मम्मी कहाँ जाने देंगी?

फिर मैंने देखा कि पेड़ों के पास ही एक छोटी बच्ची खड़ी होकर किसी को बुला रही है। मैंने घाता लिया और उसके पास चली गई। पूछा - "यहाँ क्या कर रही हो?" लड़की जल्दी - जल्दी बोलती गई कि मैं अपने घर का रास्ता भूल गई हूँ।

मैं उसे अपने घर ले आई। खाना खाया दोनों ने। मेरे पास ही सोई। मम्मी ने मेरी इस मर्ज़ी पर कुछ नहीं कहा क्योंकि यह मेरी मर्ज़ी थी।

अगले दिन मैं उसके साथ घर ढूँढ़ने गई। उसकी छः साल की उम्र थी लेकिन उसे सारे शहर के रास्ते मालूम

थे। मैंने सोचा कि बारिश ने इसके सारे रास्तों को भूला दिया होगा।

हमें जल्दी घर मिल गया। उसके घर से लौटते हुए उसने मुझे दो चीज़ें दी- [redacted] एक चॉकलेट। दूसरा एक पेन और एक बात जो मैं समझी थी कि [redacted] ज़्यादा पानी बरसने से रास्ते अपना रूप बदल लेते हैं।

लेखिका - सौम्या
(कक्षा - [redacted] छः)

- आओ इन आकृतियों को पूरा करें -

रेखांकन - इवान
(कक्षा - सात)

कहानी: मोहन की बकरी

एक मोहन नाम का बच्चा अपनी बकरी को घास चराने ले जा रहा था। वे दोनों घास के मैदान में पहुँचे। मोहन एक पत्थर पर बैठ गया और गाने सुनने लगा। बकरी घास चरने लगी। एक घंटे बाद वह घर जाने के लिये उठा तो उसने देखा, उसकी बकरी गायब थी। वह घबरा गया और अपनी बकरी को ढूंढने के लिए घास के मैदान में भागने लगा पर बकरी न मिली।

मोहन ने ठान ली कि वह अपनी बकरी ढूँढ कर ही घर जाएगा। मोहन बकरी को ढूंढता हुआ काफी दूर चला गया था। उसके पास एक दिशा सूचक यंत्र थी जिसकी मदद से वह सबसे पहले पास वाले गांव में गया। उसने एक आदमी से पूछा, "आपने कोई बकरी देखी है जो जनकपुर से आ रही थी?" उस आदमी ने सर हिलाकर मना कर दिया। कुछ क्षण बाद कहा, "मैं एक आदमी को जानता हूँ जो बकरियाँ पालता है शायद तुम्हारी बकरी उसके पास चली गई होगी।" मोहन ने उस आदमी को शुक्रिया कहा और उनसे उस आदमी का पता पूछ और चला गया अपनी बकरी को ढूँढने के लिए।

जब मोहन उस आदमी के पास पहुँचा तो वहाँ भी बकरी नहीं मिली थी। शाम हो चुकी थी और

बकरी नहीं मिली थी। वह खाली हाथ घर लौट गया

मोहन ने जैसे ही अपने घर आया तो बकरी घर के पास ही बंधी हुई थी और हँस रही थी कि तुम कहा थे मोहन? मैं तो यहीं थी। मोहन उसके तरफ दौड़ते हुए गया और उसे गले लगा लिया

लेखक: नमन

कक्षा: छः

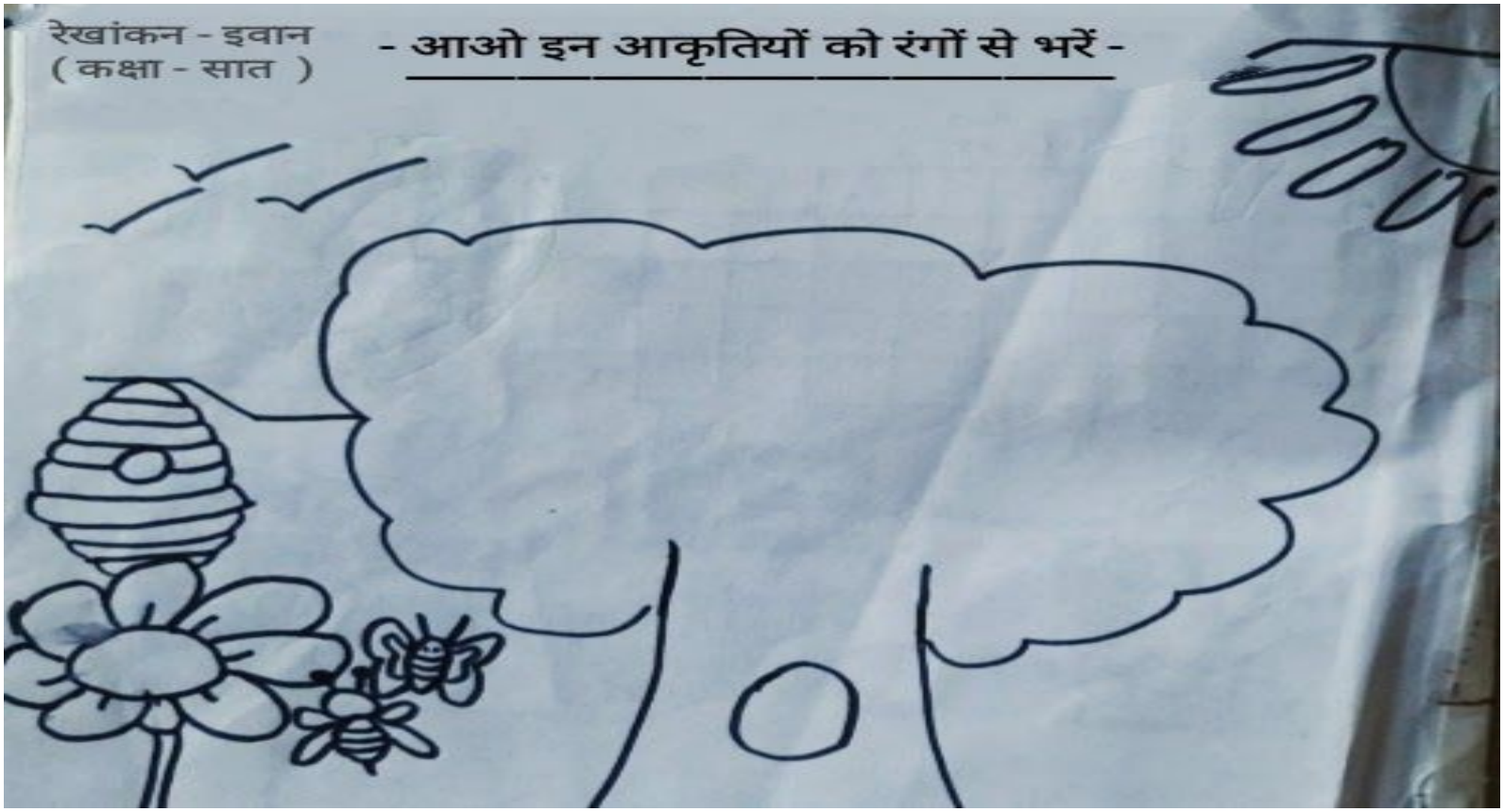

कहानी - साथी

एक बार एक घर में छिपकली का जोड़ा रहता था। उस जोड़े के चार बच्चे हुए। 4 महीनों बाद उनमें से केवल 1 बच्चा बचा। बच्चा धीरे-धीरे बड़ा हो गया। बड़ा होने पर उसने अपना घर बना लिया था। बहुत सारे लोगों के साथ रहने के बाद उसे जॉन सबसे अधिक पसंद आया। उसने निर्णय लिया कि अब वह हमेशा जॉन के साथ ही रहेगी। इस लिए वह भी जॉन घर बदलता, वह छिपकली उसके साथ-साथ घर बदल लेती। ऐसे ही एक दिन घर बदलने के दौरान सड़क पार करते समय छिपकली को आवाज आई "अरे तुम यहाँ क्या कर रही हो?" छिपकली ने सिर ऊपर उठा कर देखा तो उसे एक पेड़ पर

एक गिरगिट नज़र आया। "तुमसे मतलब?" छिपकली ने मुँह बनाकर कहा। "अरे मैं तो ऐसे ही पूछ रहा था तुम तो नाराज़ हो गई।" गिरगिट ने कहा। "देख नहीं रहा क्या मैं घर बदल रही हूँ।" छिपकली तुनक कर बोली। "अरे! नाराज़ क्यों होती हो। मैं खाली बैठा बोर हो रहा था, इसलिए सोचा कि गप्पें ही मार लूँ।" गिरगिट बोला। "मेरे पास टाइम नहीं है मैं तो जा रही हूँ।" कहते हुए छिपकली तेज़ी से आगे बढ़ गई।

जैसे ही छिपकली ने जॉन के घर में कदम रखा, वह हैरान हो गई। उस घर में जॉन अकेला नहीं था, उसके साथ कुछ बच्चे भी थे। 'अरे पर क्या जॉन के साथ पर सुन्दर लड़की कौन है? ज़रूर जॉन की पत्नी होगी।' छिपकली ने सोचा।

छिपकली ने सोचा । अब मेरा क्या, बच्चे शोर मचाएंगे, जॉन की पत्नी मुझे देखकर चिल्लाएगी । जॉन हमेशा की तरह अब रात को कमरे की बत्ती खुली नहीं छोड़ेगा, फिर मैं मच्छर कैसे पकड़ूंगी । यह सब सोच कर छिपकली बेहद परेशान हो गई । उसने सोचा कि अब उसे कोई दूसरा घर ढूंढना होगा ? तो क्या अब मुझे जॉन के बिना रहना होगा ? यह ख्याल आते ही छिपकली रोने लगी । उसे जॉन बहुत पसंद था । दिन भर छिपकली घर के कोने में दुबक कर बैठी रही । रात होते ही वह जॉन के कमरे में गई । घर छोड़कर जाने से पहले वह आखिरी बार जॉन को देखना चाहती थी । लेकिन यह क्या, जॉन के कमरे की बत्ती हमेशा की तरह खुली थी । छिपकली

की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आखिर डॉन इंसे भूला नहीं था।

लेखक - आरित
कक्षा - छः

चुटकुलें - अवनी (कक्षा - सात)

टीचर : 14 फलों के नाम लो
बच्चा : आम, अमरूद
टीचर : 12 और बताओ....
बच्चा : 1 दर्जन केले

लॉकडाउन में हम मछली बने -
हाथ लगाए, तो डर जाएँगे,
बाहर निकलो, तो मर जाएँगे!

तीन भाई थे, पागल, खो गया और दिमाग।
खो गया खो जाता है और दिमाग चाय की दुकान जाता है। पागल पुलिसमैन के पास जाकर यह कहता है -

पागल - खो गया, खो गया! खो गया, खो गया!
पुलिस - क्या? तेरा दिमाग किधर है?
पागल - वो तो चाय की दुकान में है।
पुलिस - पागल है क्या!
पागल - हाँ! मैं तो पागल हूँ। आपको कैसे पता?

जानवरों की दुनिया

चीता इतनी तेज़ कैसे भागता है?

क्या आपने कभी सोचा है कि चीता इतनी तेज़ कैसे भाग पाता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसका शरीर काफी हल्का होता है। उसके पास एक अनोखी रीढ़ की हड्डी होती है जो आसानी से मुड़ जाती है इससे वह अपने शरीर को एक अच्छा खिंचाव दे पाता है। यही वजह है कि वह तेजी से भाग पाता है।

चीता

क्या सारे जानवर तैर सकते हैं?

ज्यादातर सब जानवर तैर सकते हैं। जानवर जब से पैदा होते हैं उन्हें तभी से तैरना आता है। किन्तु मनुष्य को तैरना सीखने के बाद ही आता है। कुछ जानवर जैसे कि गोरिल्ला और चिम्पैन्ज़ी को तैरना सीखना होता है। जानवर पानी पर आराम से फ्लोट कर सकते हैं परन्तु मनुष्य और चिम्पैन्ज़ी को तैरना सीखना पड़ता है। अगर वे पानी पर फ्लोट करते हैं तो उनकी नाक के ऊपर पानी आ जाता है।

क्या आपको पता है कि नर शेर शिकार नहीं करते ?

शेरों के झुण्ड में मादा शेर शिकार करती हैं। शेर ताकतवर होता है किन्तु

क्या आप अपने घरेलू जानवर को चैक अप व वैक्सिनेशन के लिए ले जाते हैं। यदि नहीं तो आज ही आइये :

वैक्सिनेशन लगवाइए जानवरों को बीमारियों से बचाएँ।

डा॰ नीरज गर्ग
B-35 मधु विहार
9891242721

वह शेरनी का शिकार करने में मदद नहीं करता। जब शेरनी खाना लाती है तो शेर सबसे पहले खाना खाता है। जब वह खाना खा लेता है तब शेरनी व उसके बच्चे खाना खाते हैं।

लेखक - शिव
(कक्षा - सात)

छुट्टियों के दिन

ये छुट्टियों के कैसे दिन हैं,
जो दोस्तों के बिन हैं,
कहीं नहीं है शोर,
पर नाच रहें हैं मोर।

ये छुट्टियाँ कितनी अजीब हैं,
सारी सड़कें हैं सूनी,
सब लोग घर में बंद हैं
ये छुट्टियों के दिन हैं,
लोगों के बिन हैं।

जाना चाहती हूँ स्कूल,
लगता है सब कुछ गई हूँ भूल,
कहाँ है धूल
और स्कूल के रूल, ये छुट्टियों के
कैसे दिन, जो हैं स्कूल के बिन।

कवयित्री - आशीस कौर
कक्षा - 6

मेरी कविता - कोरोना

रहते रहते हो गई ऊब
पता नहीं क्या करूँ
दिन से रात, रात से दिन
पढ़ती रहूँ ! पढ़ती रहूँ ?

पता नहीं कैसी छुट्टियाँ हैं यह ?
कहीं बाहर नहीं,
सिर्फ अंदर ही अंदर रहती हूँ

स्कूल हम जा नहीं पाते,
उसकी जगह होती ऑनलाईन क्लासें
दिन से रात, रात से दिन, क्या करूँ ?
ज़ूम क्लास करती रहूँ ?

दोस्तों के साथ अब खेलना होता नहीं
अकेले साइकिल चलाने के अलावा, और कुछ बच
पहले तो दोस्तों के घर कभी भी जा सकते थे,
अब तो उनसे मिलने के लिए भी जद्दो जहद कर
पड़ती है
बोलो बोलो क्या करूँ, दोस्तों का इन्तज़ार करती

पर मैं घर पर रहने को इतना भी बुरा
नहीं बोलूंगी
क्योंकि जो हम पहले नहीं कर पाते थे,
वो अब कर पाते हैं।

मम्मा - पापा के साथ मज़े करते
रात को हम जैल भी खेलते
चॉकलेट पाइ और बाउन्टी बार्स बनाते
कुकीस, आइस्टी, कपकेक और कोल्ड
कॉफी भी बनाते

कोरोना प्लीज़ जाओ
अपनी नई दुनिया बसाओ
खुशी से अपनी ज़िंदगी बिताओ
और वापस मत आओ !!

कवयित्री - इतिवा बत्रा
कक्षा पाँच
Honesty Group

छुट्टियों के मेरे दिन

इन छुट्टियों में कोरोना वायरस बढ़ता जा रहा है। इसलिए कोई भी घर से बाहर नहीं निकल पा रहा है। कोई भी बच्चा बाहर घूमने नहीं जा सकता। जब हमारा स्कूल खुला और छुट्टियाँ खत्म हुई तब भी कोरोना नहीं गया। मैं कोरोना की वजह से कानपुर में फँस गयी। इसलिए वहीं से ऑनलाइन क्लास कर रही हूँ। कोरोना ने मुझे बहुत परेशान कर दिया है। पूरे तीन महीने हो गये और बाहर एक कदम भी नहीं रख पायी हूँ। पता नहीं कि मैं कब अपने दोस्तों से मिलूँगी और नोएडा कब जाऊँगी।

— आद्या गुप्ता
कक्षा पाँच
होनेस्टी ग्रुप

बेवजह घरसे निकलने की जरूरत क्या है ?
कोरोना से बाहर जाकर मिलने की ज़रूरत क्या है ?
पढ़ाई के लिए ऑनलाइन क्लासिस ही मज़ेदार,
स्कूल जाने की अभी ज़रूरतही क्या है ?
सबको पता है कि बाहर की हवा आजकल अच्छी नहीं
तो घर में ही रहकर कैरम बोर्ड और बड़ो खेलने का मज़ा ही कुछ और है।

कवयित्री आदीया (कक्षा - सात)

छुट्टियों के दिन

- आदित्य माथुर (कक्षा - सात)

गए कहीं नहीं,
छुट्टियाँ कैसी,
घर पर ही रह गए
ज़ूम कॉल पर मिलें सभी दोस्त,
टीचर भी बुलाएँ,
अँग्रेज़ी का हो बुक क्लब,
या चित्रकला की रेखाएँ,
सभी स्क्रीन पर दिखाएँ।
नानी की हुई सत्तरवीं सालगिरह,
देश-विदेश से सबको बुलाएँ,
पर अब वो कैसे आएँ?
ज़ूम कॉल ने फिर साथ दिया,
पार्टी भी मनाएँ!
गए कहीं नहीं,
छुट्टियाँ कैसी,
घर पर ही रह गए।

मास्क धोने की विधि

(1) मास्क को साबुन और गर्म पानी से धोएं

इसे धूप में सूखने के लिए छोड़ दें।

← 1

(2) पानी में नमक मिलाएं और मास्क को गर्म पानी या प्रेशर कुकर में उबालें।

अब उसको सूखने के लिए छोड़ दें।

← 2

(3) आप इस्त्री का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

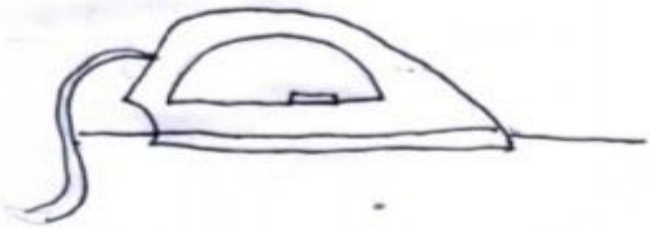

← 3

- जाह्नवी (कक्षा - 7)

- जाह्नवी (कक्षा - 7)

मास्क पहनने की विधि

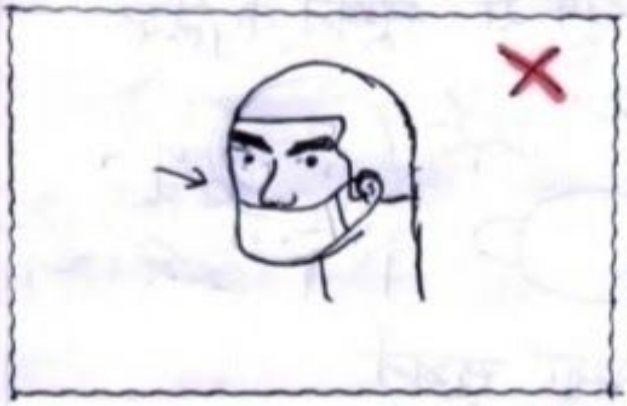

नाक खुली न रखें।

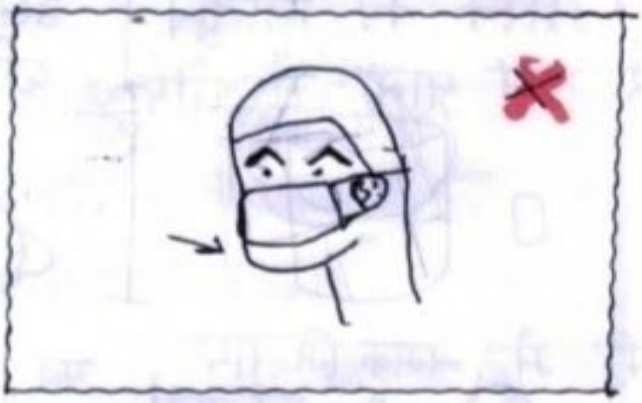

ठोड़ी खुली न रखें।

नाक और मुँह खुला न रखें।

नाक, मुँह और ठोड़ी पूरी तरह ढकना चाहिए

कविता

मैंने उस महीने से न देखा हाथी,
न कोई दोस्त न कोई साथी।
न कोई आए घर के अन्दर,
न कोई जाए बाहर।
बैठे - बैठे सारा दिन,
बन गया हूँ मैं बंदर।
सुनो मेरे भाई, कहाँ है नाई?
लंबे हो गये मेरे बाल,
हाल हो गया बेहाल।

कवि - आर्यमन महाजन (कक्षा - पाँच)

छुट्टियों के दिन

यह छुट्टियों के दिन हैं,
टेंशन के दिन हैं,
इनमें हैं होमवर्क,
घर में होमवर्क,
लॉकडाउन में होमवर्क,
रोड-ट्रिप पर जाओ,
तो होमवर्क !

पर छुट्टियों में **हैं मज़ा**
क्योंकि इनमें नहीं होती
कोई कक्षा!

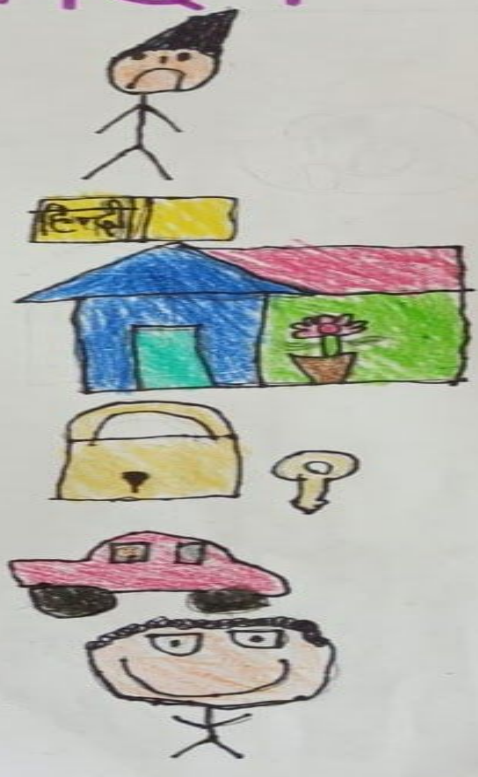

कवि: विहान अहलावत
कक्षा - 5

छुट्टियों के दिन

छुट्टियां हुई अब शुरू
मेरे दोस्त बोले अब आएगा मजा पुरू
छत पे मिलकर उड़ाते हैं पतंग
रहते हैं पूरे दिन अपने परिवार के संग

पर छुट्टियां हो गई अलग इस बार
नहीं जा सकते घर के बाहर
क्योंकि बाहर घूम रहे हैं कोरोना महाराज

इसलिए नही कर पा रहे दोस्तो से मुलाकात
बस करते ज़ूम कॉल पर बात

नया अनुभव रहा इस साल
घर रहे-रहते बड़े कर लिए अपने बाल

देख रहा हूँ महाभारत की कहानी
शुक्र है हमारे घर आई है नानी

कवि :- पुरुरव (कक्षा : पाँच)
(होनेस्टी ग्रुप)

पशु - पक्षी और मैं

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में मैंने पशु- पक्षियों के लिए खाना और पानी रखा। जब मैं शाम को छत पर खेलने जाती थी तब मैं पक्षियों के लिए दाना और पानी रखकर आती थी। वैसे तो मैंने किसी भी पक्षी को दाना खाते या पानी पीते नहीं देखा लेकिन जब मैं दूसरे दिन छत पर जाती थी तो वहाँ पर कोई भी दाना नहीं होता था। मुझे ऐसा लगता कि वहाँ पर कबूतर और कौए दाना खाने आते हैं।

हमारे घर के बाहर हमेशा कुत्तों के लिए पानी रखा होता है। मेरे दादाजी हर सुबह और शाम कुत्तों को बिस्किट खिलाते हैं। इन छुट्टियों में मैंने भी उन्हें बिस्किट और रोटी खिलाई। कुत्तों ने बिस्किट खुश होकर खाया। वो मेरे दादाजी से प्यार करते हैं। कुत्ते मेरा भी इन्तज़ार करते हैं कि मैं उनको बिस्किट खिलाने कब आऊँगी?

मैंने गर्मियों की छुट्टियों में गाय को फल और रोटी खिलाई। मैं रोज़ अपने दादाजी के साथ गाय को खाना देती थी।

यह कार्य मुझे स्कूल की तरफ से मिला था।
जिसे मैंने पूरी ईमानदारी के साथ किया है, और
अब मुझे लगता है कि पशु-पक्षी मेरा इंतज़ार
करते हैं इसलिए अब पूरे साल जब भी समय मिलेगा
मैं उन्हें रोटी, दाना खिलाऊँगी।

लेखिका – आसीस कौर
कक्षा – 5

बारिश

बारिश आई बारिश आई

अपने साथ मज़ा लाई

देखो सब चीज़ें हो गई गीली

और मुझे खूब मज़ा आया

अपने साथ और मज़ा लाओ

आओ बारिश आओ।

कवि - हेमांग (कक्षा - छः)

कोई बात नहीं

कोई बात नहीं अगर असफल हुए तो,
एक बार फिर कोशिश करने में क्या जाता है?
कोई बात नहीं अगर रो दिए तो,
अपनों के कंधे पर सिर रखने में क्या जाता है?
कोई नहीं अगर झल्ला हट में थोड़ा चिल्ला भी दिए तो,
अपनी गलती पर माफ़ी मांगने में क्या जाता है?
क्या हुआ अगर मत भेद हुए तो,
अपनों को कुछ समझने और थोड़ा समझाने में क्या जाता है?
कोई बात नहीं अगर एक दिन खराब बीता,
अपनी माँ को गले लगा कर सब बताने में क्या जाता है?
कितनी छोटी सी है ज़िंदगी,
थोड़ा सा रूठने और थोड़ा मनाने में क्या जाता है?

कवयित्री - डोली शर्मा (अध्यापिका)

एक था हाथी बड़ा करामाती

एक था हाथी
बड़ा करामाती
उसके थे हर तरह के दोस्त
कुत्ता बिल्ली चूहा खरगोश।

उसका नाम था गोमबोस
उसको खाने में पसंद थे मोमोज़
उसके पास था एक बड़ा सा महल
जहाँ रहती थी हमेशा चहल पहल।

करता था वो सबकी रक्षा
हाथी था वो सबसे अच्छा।

गीतहरी बंदर था हो सियार
सबकी सहायता करने को रहता था तैयार।

कवि - ध्रुव (कक्षा - छः)

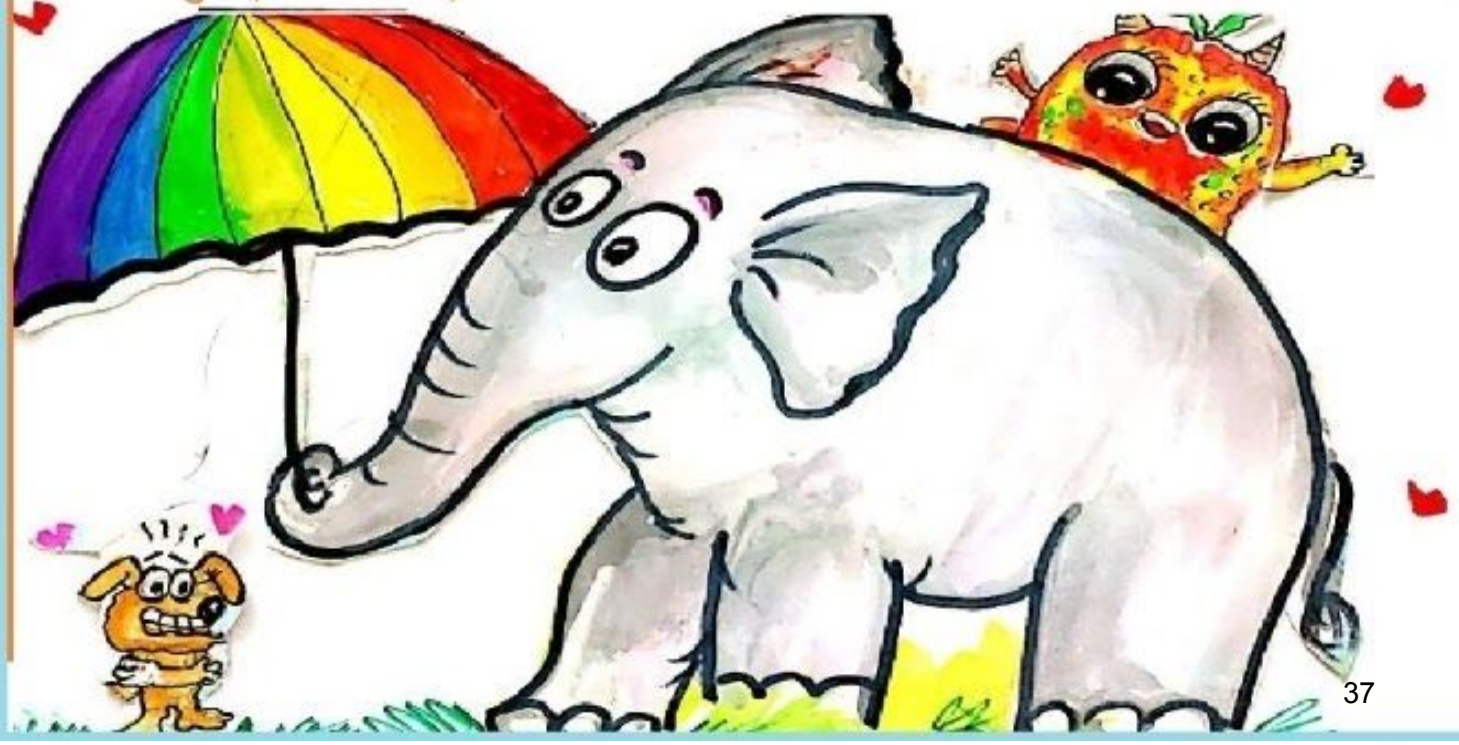

पनीर की कहानी

नमस्ते! मैं हूँ एक पनीर, और आज मैं अपने जीवन की कहानी आप सब को बताने वाला हूँ।
सबसे पहले मैं गरम दूध था। एक मानव ने मेरे ऊपर दही डाली। फिर उसने मुझे एक कपड़े में बांध दिया और मेरे अंदर का सारा पानी निचोड़ दिया। मैं बहुत मुलायम हो गया था। मुझे बहुत हल्का लग रहा था मैं थोड़ी ही देर के लिये पनीर बना था कि जाह्नवी नाम की बच्ची ने खा लिया।

लेखिका - जाह्नवी
कक्षा - सात

" सभी का खून है शामिल
यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का हिंदुस्तान
थोड़ी है "

- डॉ. राहत इंदौरी